राजभाषा विशेषांक

पंजज्योति

वर्ष 2023-2024

सत्यमेव जयते

अंक-7

उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
लुधियाना।

https://sroludhiana.esic.gov.in/attachments/publicationfile/1a8cab63c7ddbe459558598c627238d2.pdf

नराकास, लुधियाना द्वारा प्रदत्त राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु
प्रथम पुरस्कार (वर्ष 2022-23) संबंधी शील्ड ग्रहण करते हुए श्री प्राणेश कुमार सिन्हा,
उप निदेशक (प्रभारी)

नराकास, लुधियाना द्वारा प्रदत्त राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु
प्रथम पुरस्कार (वर्ष 2022-23) संबंधी प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए श्री सतीश कुमार,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

विषय सूची

क्र.सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	विषय सूची	1
2.	पत्रिका समिति एवं संपादक मंडल	2
3.	संदेश	3-4
4.	संरक्षक की कलम से	5
5.	संपादक की कलम से	6
6.	सफलता	7
7.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)	8-9
8.	कोरोना तनिक न करुणाई	10
9.	जब "मित्र" बन गया पौधा	11-12
10.	भारत के प्रमुख आश्चर्य	13-16
11.	नारी सशक्तिकरण	17
12.	महाप्राण निराला	18-21
13.	राजभाषा पखवाड़ा-प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध	22-24
14.	पंजाबी बनाम हिन्दी	25-26
15.	कहानी	27
16.	हिन्दी के संख्यावाचक शब्द	28
17.	कार्यालय पुस्तकालय-एक नज़र में	29
18.	हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना वर्ष 2023 के लिए कर्मचारियों की सूची	30-32
19.	राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिताओं के विजेतागण	33
21.	आरती ॐ जय जगदीश हरे के रचियता: पंडित श्रृद्धाराम फुल्लौरी	34-35
22.	रचना (आरती: ॐ जय जगदीश हरे)	36
23.	विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कार्यकलापों की झलकियाँ	37-38
23.	विभागीय फोटो	39-44

पंजज्योति

अंक–7, वर्ष 2023–24

संरक्षक

प्राणेश कुमार सिन्हा
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

उप संपादक

शमशेर सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पत्रिका समिति

अश्वनी कुमार सेठ
सहायक निदेशक

सत्यवान सिंह
सहायक निदेशक

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

प्रकाशक :- कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

दूरभाष: 0161-2670838-42, 2671839 टोल फ्री नं: 1800-180-0026

वेबसाईट: www.sroludhiana.esic.gov.in ई-मेल: sro-ludhiana@esic.gov.in

अस्वीकरण:

राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका केवल विभागीय परिचालन हेतु प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के खुद के विचार हैं। उनसे संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रतीकात्मक रुप से कुछ चित्र इंटरनेट से साभार लिए गए हैं। उन चित्रों पर कॉपी राइट चित्रकार या फोटोग्राफर का ही रहेगा।

चित्रों के लिए सम्बद्ध चित्रकार/फ़ोटोग्राफर को हार्दिक धन्यवाद।

संदेश

यह जानकर हर्ष हुआ कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की हिंदी गृह पत्रिका **'पंज ज्योति'** के 7वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन राजभाषा के सतत विकास का भी द्योतक है। पत्रिका का मूर्त रूप सभी के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक और मनोरंजक सामग्री से पूर्ण हो।

पत्रिका प्रकाशन के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय के रचनाकारों और संपादक मण्डल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कमल किशोर सोन

कमल किशोर सोन
(भा.प्र.से.) महानिदेशक

श्री प्राणेश कुमार सिन्हा
उप निदेशक प्रभारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
लुधियाना।

संदेश

राजभाषा कार्यान्वयन के 'ख' क्षेत्र में स्थित पंजाब राज्य में हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। लुधियाना जैसी विकसित जगह में लोगों के व्यापारिक व्यवहार के साथ भाषा भी आदान–प्रदान में व्यवहृत हो जाती है। ऐसे में हिंदी सरल और सुगम माध्यम के रुप में सहायक बन जाती है। उप क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना की हिंदी पत्रिका 'पंजज्योति' के 7वें अंक का प्रकाशन इसी व्यवहार की परिणति और राजभाषा कार्यान्वयन की प्रतिबद्धता है।

इस सुन्दर सृजनात्मक कार्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

9.8.23

रत्नेश कुमार गैातम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

श्री प्राणेश कुमार सिन्हा
उप निदेशक प्रभारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
लुधियाना।

संरक्षक की कलम से

प्रिय साथियो,

हार्दिक अभिनंदन।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के नए अंक की प्रस्तुति मेरे लिए अपूर्व आनंद व हर्ष का विषय है। यह हमारे प्रबुद्ध पाठकों के सुझाव व उत्साह तथा साथी अधिकारी/कर्मचारियों के रचनात्मक सहयोग का प्रतिफल है कि एक और नए अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

यह सूचित करते हुए अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना भाषायी वर्गीकरण के आधार पर 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत आने के बावजूद, कार्यालय में राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। यह पत्रिका ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ सभी कर्मचारियों/अधिकारियों की रचनाधर्मिता व मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति का आयाम तथा संपादन मंडल के अथक प्रयास का सफल परिणाम है।

अपनी बात इस आशा और विश्वास के साथ समाप्त करना चाहूंगा कि ''पंजज्योति'' का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर पुनः खरा उतरेगा। प्रबुद्ध पाठकों से यह भी आशा रहेगी कि वे इस अंक को लेकर अपने विचारों व सुझावों से हमें प्रोत्साहित करेंगे।

(हस्ता.)

(प्राणेश कुमार सिन्हा)

उप निदेशक प्रभारी

संपादक की कलम से

गृह पत्रिका 'पंजज्योति' का सातवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका का प्रकाशन उप निदेशक (प्रभारी) की प्रेरणा और सभी साथी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास का फल है। नराकास द्वारा कार्यालय को वर्ष 2022–23 के लिए राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है और इसी वर्ष के लिए कार्यालय की गृह पत्रिका को भी विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके लिए इस अवधि में तैनात कार्यालय प्रभारी, संबंधित सहायक निदेशक तथा राजभाषा शाखा में तैनात स्टाफ को श्रेय जाता है।

कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कार्यकारिणी समिति का सदस्य भी बनाया गया है। कार्यालय में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दृष्टि से वातावरण को और बेहतर बनाने के लिए वर्ष 2022–23 से राजभाषा चल शील्ड प्रतियोगिता भी आरंभ की गई।

सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा विभाग और मुख्यालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिंदी में कार्य करने का भरसक प्रयास करते हैं और परिणाम स्वरुप कार्यालय ने कई लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं और शेष लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास जारी है। ऐसी स्थिति में उम्मीद है कि पत्रिका प्रकाशन से कार्यालय में हिंदी में कामकाज का माहौल और अच्छा होगा जिससे शेष लक्ष्यों की भी प्राप्ति की जा सकेगी।

कोशिश की गई है कि पत्रिका में कमियाँ न के बराबर रहें तथापि कमियों में सुधार हेतु और पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए, कृपया प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं।

(हस्ता.)
सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा. भा.)

सफलता

श्रम है सफलता का राज
सुधरते इससे कई काज
सफलता जो तुम पाना चाहो
आगे–आगे कदम बढ़ाओ
जीवन में है सरसता आती
रे होए जब सफलता साथी
सफतला बनती एक इतिहास
सबका होता इससे विकास
सफलता कुंजी जिसके पास
होता नहीं वह कभी हताश

विकास का पहिया जब–जब घूमें
सफलता उसके पांव चूमे
सफलता है गौरव प्रतीक
रे बात भाई तुम समझो ठीक
सफल व्यक्ति जब आदर पाता
बड़पन उसका और बढ़ जाता
श्रम पसीना जो बहाता
अधिकारी इसका तुरंत ही बन जाता
कहे प्राणी सफलता पाओ
जग में अपनी साख बढ़ाओ

(हस्ता.)
मंजु शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)

''नराकास'' का गठन:

राजभाषा विभाग के दिनांक 22.11.1976 के कार्यालय ज्ञापन सं. 1/14011/12/76–रा.भा. (का–1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जाता है। समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव (राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है।

अध्यक्षता:

इन समितियों की अध्यक्षता नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंको आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है। अध्यक्ष को राजभाषा विभाग द्वारा नामित किया जाता है। नामित किए जाने से पूर्व प्रस्तावित अध्यक्ष से समिति की अध्यक्षता के संबंध में लिखित सहमति प्राप्त की जाती है।

सदस्यता:

नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि अनिवार्य रूप से इस समिति के सदस्य होते हैं। उनके वरिष्ठतम अधिकारी (प्रशासनिक प्रधान) से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें।

सदस्य-सचिव:

समिति के सचिवालय के संचालन के लिए समिति के अध्यक्ष द्वारा अपने कार्यालय से अथवा किसी सदस्य कार्यालय से एक हिंदी विशेषज्ञ को उसकी सहमति से समिति का सदस्य सचिव मनोनीत किया जाता है। अध्यक्ष की अनुमति से समिति के कार्यकलाप सदस्य सचिव द्वारा किए जाते हैं।

बैठकें:

इन समितियों की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक समिति की बैठकें आयोजित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा एक कैलेंडर रखा जाता है जिसमें प्रत्येक समिति की बैठक हेतु एक निश्चित माह निर्धारित किया जाता है। इन बैठकों के आयोजन संबंधी सूचना समिति के गठन के समय दी जाती है और निर्धारित महीनों में समिति को अपनी बैठकें करनी होती हैं।

प्रतिनिधित्व:

इन समितियों की बैठकों में नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयो/उपक्रमों/बैंको आदि के प्रशासनिक प्रधान भाग लेते हैं। राजभाषा विभाग (मुख्यालय) एवं इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी भी इन बैठकों में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। नगर स्थित केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की शाखाओं में से किसी एक प्रतिनिधि एवं हिंदी शिक्षण योजना के किसी एक अधिकारी को भी बैठक में आमंत्रित किया जाता है।

उद्देश्य:

केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे सभी मिल बैठकर कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सके। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

कोरोना तनिक न करुणाई

बेबसी भी देखी,
बेरुखी भी देखी,
देखी निष्ठुर नयन को,
तिनका तिनका जिन्हें संवारा,
भूल गया एक पल को,
खाली थी जेब और,
पेट भी खाली,
घूमता देखा वीरान शहर को,
उम्मीद की लिए थाली,
दर्शक देखे, दीर्घा देखे,
देखी दुनिया जहांन,
इतिहास को बनते देखा,
ढ़हती इंसानियत का मकान,
न उम्मीदों के बादल देखे,
बेचैनी सी–रिमझिम,
गरज–गरज कर जब ये बरसा,
सहम उठा व्याकुल मन,
पगडंडी विचरित जंगलवृंद,
आंगन में पंछी चहकते,
कंक्रीटों के पिंजरे में कैद,
मानवता को भटकते,
प्रकृति को हंसते देखा,
निरीह मृग को मादकते,
स्वछंद गगन में पंछी देखा,
हवा में बहकते,
खाली सड़क, वीरान चेहरे,
भय के बादल गहरे,
देख लिया इंसान के दुर्लभ,
वो दोरुपिया स्वाभाव के चेहरे,
महाप्रवास के अद्भुत दर्शन,
स्मृति कोयल पर गहरे,
तिनका–तिनका गठरी बांधे,
घर लौटे भरी दोपहरे,
हाय तुझे न लाज आई,
कोरोना तनिक न करुणाई,
भूखे बालक की क्रंदन पर,
निष्ठुर नयन न भरमायी,
झूठी निकली मायानगरी,
झूठी इसकी माया,
खून पसीने से जिनको सींचा,
मोह मिली न छाया,
संघर्ष बड़े गहरे देखे,
चेहरों के पीछे चेहरे देखे,
स्वछंद गगन के पंछी पर,
लगते निर्गम पहरे देखे,
दो खेमे में बंटे समाज की,
उभरी लकीर गहरे देखे,
चारदीवारी में कैद जिंदगी,
उम्मीदों को भी ठहरे देखे।।

राजू कुमार
सहायक

जब ''मित्र'' बन गया पौधा

नेहा की मम्मी का कार्यालय जिस बिल्डिंग में था उसमें एक नया कार्यालय खुला। हरा–भरा व सुन्दर दिखने के लिये कार्यालय में खूबसूरत पौधे रखे गये जिनमें से कुछ में सुन्दर फूल भी खिले हुये थे।

कुछ दिनों तक तो पौधों का बहुत ध्यान रखा गया लेकिन उसके बाद किसी ने उनका जरा भी ध्यान नहीं रखा। उन्हें उचित समय पर धूप व प्राकृतिक हवा नहीं दिया गया। गुड़ाई और खाद तो दूर की बात यहाँ तक की उन्हें पानी भी बहुत ही मुश्किल से मिलता।

कार्यालय प्रबन्धक सहित सभी अपना कार्य निपटा कर शाम को घर चले जाते। इस प्रकार सभी की उदासीनता के कारण अधिकांश पौधे सूखते चले गए। केवल एक पौधा जो आकार में बड़ा व जानदार था बचा रहा।

एक दिन नेहा अपनी मम्मी के साथ कार्यालय में गई तो उसकी नजर उस पौधे पर पड़ी। निढ़ाल व उदास/प्यासे पौधे को लगा कि उस बच्ची ने उसकी दयनीय हालत देख ली है और सोचने लगा कि काश ये बच्ची मुझे अपने घर ले जाये तो शायद मैं बच जाऊँ। नेहा ने वापिस घर आते हुये अपनी मम्मी से कहा कि मम्मी देखिये ना, कितना सुन्दर पौधा है। लेकिन मुर्झाया हुआ है। इसे देखकर लगता है कि कोई इसकी सही देखभाल नहीं करता है। क्यों ना हम इसे अपने घर ले जायें। पहले नेहा ने वहीं अपनी वाटर बोतल से पौधे में पानी डाला। फिर नेहा ने अपनी मम्मी से कहा कि वह कार्यालय प्रबन्धक से बात करें। प्रबंधक उसकी मम्मी की बात को इंन्कार नहीं कर सके और मान गये।

नेहा ने अपनी छोटी बहन पैरी की मदद से पौधे को एक अन्य बड़े गमले में उगा दिया। गुड़ाई की, खाद डाली, पानी दिया तथा खुली हवा में रख दिया। नेहा को सुबह उठते ही पौधे का ख्याल

आया और वह भागते–भागते हुए पौधे के पास गई, उसे वह पौधा बहुत ही प्यारा लगा। आज वह सीधा व स्वच्छ दिख रहा था, उसको देख कर ऐसा लग रहा था कि मानो उसमें नया जीवन आ गया है।

अब दोनों जो घर में पहले पौधे लगे हुये थे उनके साथ–साथ नियमित रुप से नये पौधे का भी ध्यान रखने लगे। धीरे–धीरे पौधे में नये फूल आने लगे। कुछ दिनों बाद शहर में पुष्प प्रर्दशनी का आयोजन होना था। समाचार पत्र के साथ आये पैम्फलेट से पता चला तो उन्होंने अपने पौधे को प्रदर्शनी में ले जाने को कहा।

नेहा व पैरी दोनों पौधे को प्रदर्शनी में लेकर गये तो सभी ने बुहत तारीफ की क्योंकि उस जैसे सुन्दर फूल प्रतियोगिता में लाए गये दूसरे किसी पौधे में नहीं खिले थे। स्वभाविक है कि निर्णायक को ये पसन्द आने ही थे। ऐसा ही हुआ कि इस पौधे को प्रथम पुरस्कार मिला। उसी सुबह समाचार पत्र में नेहा व पैरी का प्रथम पुरस्कार विजेता के रुप में नाम छपा, तत्पश्चात उसके अड़ोस–पड़ोस में रहने वाले बच्चों का भी फूल पौधों के प्रति ध्यान खूब पड़ा।

मंजु शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

भारत के प्रमुख आश्चर्य

विश्व के सात आश्चर्य के अनुरूप भारत में भी कई प्रतिष्ठित समाचार पत्र समूह यथा टाइम्स ऑफ इण्डिया, एनडीटीवी एवं कुछ टूर आपरेटरों द्वारा देश की विरासतों की एक आश्चर्य सूची तैयार की गई है। उपरोक्त संस्थाओं द्वारा तैयार की गई धरोहरों की सूची में एकाद्य को छोड़कर अमूमन कई धरोहर एक समान रूप से उपस्थित है। आईए जाने भारत की कुछ नायाब धरोहरों के बारे में, जो भारत के वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं–

1. स्वर्ण मंदिर

स्वर्ण मंदिर पंजाब के प्रसिद्ध शहर अमृतसर में स्थित है। यह स्थल सिक्ख धर्मावलंबियों की श्रद्धा का अनन्य केन्द्र है। इस मंदिर की स्थापना सिक्खों के पांचवें गुरू श्री अर्जुन देव जी द्वारा लगभग 400 वर्ष पूर्व की गई थी। स्वर्ण मंदिर की वास्तुकला भव्य एवं आकर्षक है, जहां वर्ष भर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। इस मंदिर को हरमंदिर साहिब एवं दरबार साहिब के नाम से भी जाना जाता है।

2. हम्पी

भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित हम्पी यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है। यह स्थल प्राचीन विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। हम्पी तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित है। यहां का विजय विठ्ठल मंदिर अपने अद्भूत वास्तुकला के लिए जाना जाता है। उक्त मंदिर के पूर्वी भाग में प्रस्तर निर्मित रथ काफी मनोहर एवं दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त यहां स्थित वीरूपाक्ष मंदिर भी काफी आकर्षक है। यह स्थल प्राकृतिक सुषमा से भी लबरेज है, जो यहां आने वाले सैलानियों का

मन मोह लेता है। यहां हजारा राम मंदिर, सनापुर झील, गगन महल, हिप्पी द्वीप, लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर, ससिवेकालु गणेश मंदिर, मतंगा हिल, कृष्ण मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया जा सकता है।

3. गोमतेश्वर

गोमतेश्वर में एक भव्य एवं ऊंची प्रतिमा का निर्माण किया गया है, जिसकी ऊंचाई लगभग 58 फीट ऊंची है, जो ग्रेनाइट चट्टान से निर्मित है। यह स्थल कर्नाटक राज्य के श्रवणबेलगोला में स्थित है। गोमतेश्वर में स्थापित प्रतिमा जैन धर्म से संबंधित बाहुबली को समर्पित है। कार्यात्सर्ग मुद्रा में खड़ी यह प्रतिमा बाहुबली की ध्यान साधना को रेखांकित करती है। जैन धर्म के श्रद्धालुओं के लिए यह स्थल पवित्र है। जैन ग्रंथों की मान्यता अनुसार बाहुबली या गोमतेश्वर जैन धर्म के पहले तीर्थकर ऋषभदेव या आदिनाथ के दूसरे पुत्र थे। महामस्तकाभिषेक उत्सव गोमतेश्वर मंदिर का प्रमुख उत्सव है, जिसका आयोजन प्रत्येक 12 साल में किया जाता है। उक्त उत्सव के दौरान हजारों की संख्या में पर्यटक और जैन श्रद्धालु शामिल होते है। इस दौरान गोमतेश्वर की प्रतिमा को दूध, केशर, घी और दही से स्नान कराया जाता है।

4. खजुराहो

खजुराहो हिन्दू और जैन धर्म के स्मारकों का एक समूह है। यह स्थल मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। यह स्थल प्रसिद्ध शहर झांसी से लगभग 75 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। खजुराहो के स्मारक यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल है। यहाँ के मन्दिर नागर वास्तुकला का उत्कृष्ठ उदाहरण हैं। हालांकि यहां की मंदिरों की

ज्यादातर मूर्तियाँ कामुक एवं नग्न अवस्था में स्थापित हैं, जिसका निर्माण चन्देल राजवंश के समय 950 और 1050 ईस्वी के मध्य किया गया था। एक अनुमान के अनुसार खजुराहो में कुल 85 मन्दिर है जो कि 12वीं शताब्दी में स्थापित किये गए। वर्तमान में इनमें से केवल 25 मन्दिर ही बचे हैं। कन्दारिया महादेव मंदिर प्रमुख आकर्षण है।

5. कोणार्क

कोणार्क मंदिर ओडिशा राज्य में स्थित है, जो कि सूर्यदेव को समर्पित है। यह मंदिर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। यह भारत के प्राचीन सूर्य मंदिरों में से एक है। यहां देश और दुनिया से बड़ी संख्या में श्रद्धालु भ्रमण के लिए आते है। साल 1984 में कोणार्क मंदिर को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल में शामिल किया गया था। ऐसी मान्यता है कि कोणार्क मंदिर का निर्माण गंग वंश के शासक राजा नृसिंहदेव द्वारा करवाया गया था।

कोणार्क मंदिर जगन्नाथ पूरी से 35 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। इस मंदिर का निर्माण बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट से हुआ है। कोणार्क दो शब्दों कोण और अर्क से मिलकर बना है। अर्क अर्थात सूर्यदेव हैं। इस मंदिर में सूर्यदेव रथ पर सवार हैं। इस मंदिर के निर्माण की यह विशेषता है कि सूर्य की पहली किरण मंदिर के प्रवेश द्वार पर पड़ती है। मंदिर कलिंग शैली में निर्मित है जो काफी भव्य एवं आकर्षक है। इसकी संरचना रथ के आकार की है जिसमें कुल 12 जोड़ी पहिए हैं। पहिए का व्यास करीब 3 मीटर है जो कि वक्त बताने का भी कार्य करते हैं। इस रथ में सात घोड़ें हैं, जो कि सप्ताह के सात दिनों का प्रतीक हैं।

6. नालंदा

यह विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। यह स्थल जिला मुख्यालय बिहारशरीफ से लगभग 15 किलोमीटर तथा पटना से लगभग 84 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस स्थल की खोज प्रसिद ब्रिटिश पुरातत्वविद श्री अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा की गई थी। यह महान विश्वविद्यालय बौद्ध, हिन्दू धर्म एवं दर्शन के साथ–साथ चिकित्सा, गणित, ज्योतिष शास्त्र आदि

विषयों के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। ऐसा माना जाता है कि इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से हजारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इस विश्वविद्यालय की स्थापना चौथीं सदी में गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वारा करवाई गई थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बताया है कि इस विश्वविद्यालय में लगभग दस हजार छात्र एवं पंद्रह सौ शिक्षक पठन–पाठन का कार्य करते थे। लगभग 1197 ईसवी में तुर्की आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया था। बताया जाता है कि जब इस विश्वविद्यालय को नष्ट किया गया था, तो इसका पुस्तकालय लगभग छह माह तक जलता रहा था, जो इसकी भव्यता के बारे में बहुत कुछ बताता है।

7. ताजमहल

ताजमहल आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। यह स्थल दुनिया के सात प्रमुख आश्चर्यों में शामिल है। यह विश्व धरोहर स्थल के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है, जिसे मुगल सम्राट शाहजहां की पत्नी मुमताज महल की याद में बनाया गया था। ताजमहल का निर्माण सन् 1632 से 1648 तक चला। ताजमहल अपने निर्माण काल से लेकर अब तक दुनिया की अद्वितीय वास्तुकला के रूप में माना जाता है। यह यमुना नदी के किनारे स्थित है। ताजमहल के निर्माण में लाल पत्थर, सफेद मार्बल, पीतल, सोना, नीलम, मोती, मकरानी पत्थर और अन्य रत्नों का उपयोग किया गया है।

श्रीमती पूजा कुमारी
पत्नी श्री मुकेश कुमार, सहायक

नारी सशक्तिकरण

''नारी सशक्तिकरण''– यह एक ऐसा विषय है जो प्रायः चर्चा में या यूं कहूं कि वाद–विवाद में रहता है। कुछ लोगों का मानना है कि नारी को सशक्त करना अत्यन्त आवश्यक है, अपितु मेरा सवाल है कि क्या शक्ति को भी सशक्त करना पड़ता है?

जिसे प्रकृति ने ही सशक्त किया हो, उसे मनुष्य क्या शक्ति प्रदान करेगा...... .... कुछ निंबुद्धि पुरुषों का कहना है कि हम नारीवादी है, हम अपनी घर की स्त्रियों को आजादी देते हैं कि वे, वह सब कर सकती है, जो वह करना चाहती है.................... परंतु क्या सचमुच स्त्री को स्वयं की आजादी के लिए किसी पुरुष की इज़ाजत चाहिए ?

क्या आजादी उसका जन्म सिद्ध अधिकार नहीं? क्यों पुरुष की स्वतंत्रता अप्रश्नेय होती है, किंतु स्त्री की आजादी विचाराधीन हो जाती है!

संसार की विडंबना है कि सवाल हमेशा औरत की काबिलियत पर ही उठाए जाते हैं। उसे अपनी आवाज दबानी पड़ती है या उसे इज्जत का हवाला देकर चुप करवाया जाता है। देखा जाए तो स्त्री पुरुष के लिए भगवान का ठहराया हुआ अनुग्रह है। पौराणिक ग्रन्थों में स्त्री, को पुरुष की शोभा कहा गया है, किंतु दुर्भाग्यवश आज भी वह कई जगह पर केवल पैर की जूती समझी जाती है।

अब समय आ गया है कि यह समाज आत्म विशलेषण करे, कि औरत की कम हिस्सेदारी समाज के विकास को अवरुद्ध कर रही है। मेरा मानना है कि पुरुष एंव स्त्री दो विभिन्न आकृतियां हैं जो मिलकर एक पूर्ण चित्र की रचना करती हैं, इसलिए इनमें समानता का कोई मुकाबला नहीं क्योंकि दोनों एक–दूसरे की पूरक हैं।

अंत में, मैं यही कहना चाहूंगी कि आज जरूरत है, तो केवल स्त्री की शक्ति को स्वीकारने की न कि उस पर सवाल उठाने की । क्योंकि, मन्नू भंडारी ने लिखा था कि ''एक पुरुष की सुलझी हुई दृष्टि, स्त्री को कई उलझनों से उबार लेती है।''

नारी सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिला दिवस मनाने से नहीं बल्कि हर रोज हर महिला को उसके हिस्से का अधिकार तथा सम्मान देने से है।

जान्हवी चौधरी
(ब.का.स्टाफ)

महाप्राण निराला

''अभी न होगा मेरा अन्त, अभी न होगा मेरा अन्त,
अभी–अभी ही तो आया है मेरे वन में मृदुल वसन्त''

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के अग्रणी कवि रहे हैं। उन्हें छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना गया है। उनका जन्म पश्चिम बंगाल के महिषादल में 21 फरवरी 1899 में हुआ था। वे मूलतः उत्तर प्रदेश के उन्नाब जिला के बैसवाड़ा अंचल के रहने वाले थे। उनके जीवन का अधिकांश समय अवध क्षेत्र में बीता है, नतीजतन उनके कृतित्त्व में बंगाल व अवध के साहित्य व संस्कृति के गहरे रंग परिलक्षित होते हैं। उनके जीवन तथा कृतित्व पर तुलसीदास से लेकर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ ठाकुर का गहरा प्रभाव है।

निराला हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा व जयशंकर प्रसाद के साथ वे छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। उन्होंने अपने काव्य में कल्पना से ज्यादा यथार्थ का सहारा लिया है। हिन्दी साहित्य की दुनिया में निराला ने साहित्य की सभी विद्याओं में एक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और अनुवादक के रूप में अपना अमूल्य योगदान दिया। उनकी प्रमुख कृतियों में राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता, अनामिका, अणिमा, नये पत्ते, बैला (काव्य), अप्सरा, निरुपमा, प्रभावती, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा (उपन्यास), चतुरी चमार, सुकुल की बीवी (कहानी–संग्रह), रवीन्द्र कविता कानन, चावुक, प्रवन्ध पराग (निवन्ध–आलोचना) आदि प्रमुख है।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा महिषादल हाई स्कूल से हुई थी। हाई स्कूल की पढ़ाई पास करने के बाद उन्होंने घर पर रहकर ही संस्कृत, अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया था। जिसके बाद वह अपने गांव गढ़कोला उन्नाव आ गए थे। उन्हें तुलसीदास कृत रामचरितमानस बहुत पसंद था। अपने श्रम से उन्होंने हिंदी, बांग्ला, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं में महारत हासिल की। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, रविंद्रनाथ टैगोर जैसे महापुरूषों का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव रहा है।

अमूमन काव्य कर्म में रत कवियों को सुकुमार माना जाता है। लेकिन निराला सुकोमल काया वाले छवि के उलट एक बलशाली व पहलवान सरीखे शरीर के स्वामी थे। उनका लंबा चौड़ा शरीर

पहलवान होने का भ्रम पैदा करता था। जितना प्रभावशाली उनका व्यक्तित्व उतना ही वे बड़े दयालु थे। कलकत्ता की सड़कों पर सर्द रातों में किसी ठिठुरते व्यक्ति को देखकर अपना कम्बल देने में ज़रा भी संकोच नहीं करते थे। बेशक उनका जीवन अभाव में बीता, लेकिन किसी जरूरतमंद की मदद करने में कभी भी वे पीछे नहीं हटे। उनका यह स्वभाव उनको समकालीन साहित्यकारों से काफी अलग करता है। यह भी दीगर है कि उन्हें खेलने, घूमने, तैरने और कुश्ती से बड़ा लगाव था।

पंद्रह वर्ष की आयु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया था। उनकी पत्नी मनोरमा देवी रायबरेली जिले के पंडित राम दयाल की पुत्री थी। वह बहुत ही शिक्षित थी और संगीत में गहरी रुचि रखती थी। इसके अतिरिक्त वह हिन्दी में थोड़ा बहुत काव्य लेखन भी किया करती थी।

प्रारंभ में निराला ने महिषादल में 1918 से 1922 तक नौकरी की थी। इसके पश्चात वे संपादन, अनुवाद कार्य और स्वतंत्र लेखन में प्रवृत्त हो गए। 1932 तक कोलकाता में प्रसिद्ध पत्रिका समन्वय का संपादन किया। उन्होंने मतवाला के संपादक मंडल में भी कार्य किया था। वे लखनऊ से प्रथम मासिक पत्रिका सुधा के साथ भी जुड़े रहे। वे 1942 से लेकर अपनी मृत्यु तक इलाहाबाद में रहकर अनुवाद के साथ–साथ स्वतंत्र लेखन का भी कार्य करते रहे। उनकी सबसे पहली कविता जन्मभूमि, प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में प्रकाशित हुई। 1920 ई के आसपास उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू किया था। उनकी पहली काव्य रचना जन्म भूमि पर लिखी गई थी। उनके द्वारा लिखी गई 'जूही की कली' बहुत ही लंबे समय तक प्रसिद्ध रही थी, जो कि 1922 ईसवी में प्रकाशित हुई थी।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपने काव्य में खड़ी बोली का कुशलतापूर्वक उपयोग किया है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में चित्रण कुशलता व दर्शन की गहराई झलकती है। यह भी सच है कि निराला ने काव्य में कल्पना से ज्यादा यथार्थ का सहारा लिया है। चाहे किसान हो या मजदूर, सबकी पीड़ा को निराला ने अपने काव्य में बड़े मार्मिकता से वार्णित किया है, इसकी एक बानगी **''वह तोड़ती पत्थर''** में दृष्टिगोचर होती है–

वह तोड़ती पत्थर, देखा मैंने उसे
इलाहाबाद के पथ पर, वह तोड़ती पत्थर,
चढ़ रही थी धूप, गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप, उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू, गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहरः– वह तोड़ती पत्थर ।

दुख व अभाव निराला के जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। निराला को अपने जीवन के हरेक पड़ाव पर त्रासदियों का सामना करना पड़ा।

''दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूं आज जो नहीं कही''

जब वह तीन साल के थे तब उनकी माताजी की मृत्यु हो गई फिर युवावस्था में उनके पिताजी का भी निधन हो गया था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पूरी दुनिया में स्पैनिश फ्लू महामारी फैल गई थी। ऐसा माना जाता है कि स्पैनिश फ्लू महामारी से पूरी दुनिया में पांच करोड़ तथा भारत में लगभग पौने दो करोड़ लोग अकाल मृत्यु के शिकार हुए। इस महामारी ने स्वयं निराला के पूरे परिवार को उजाड़ दिया था। महामारी में उनकी पत्नी के साथ चाचा, भाई, भाभी की भी मृत्यु हो गई थी।

अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद निराला टूट से गए थे, लेकिन इसके बाद भी उन्होंने लेखन कार्य नहीं छोड़ा। ज्ञात है कि उनकी व्यक्तिगत वेदना का असर उनके काव्य पर भी पड़ा। **'राम की शक्ति पूजा'** एवं **'सरोज स्मृति'** जैसे काव्य पर उनकी पीड़ा और जीवन त्रासदी का गहरा असर रहा है। उनके जीवन संघर्ष और असमर्थता को निम्न पंक्तियों के द्वारा भी समझा जा सकता है–

''वह एक और मन रहा राम का जो न थका''

कवि निराला के प्रति नियति द्वारा नियमित रूप से निष्ठुरता दिखाई गई। उनके जीवन के त्रासदियों के क्रम में अपनी पुत्री सरोज का असमय खोना भी शामिल है। पुत्री सरोज की मृत्यु ने निराला को काफी तोड़ दिया था। अपनी पुत्री सरोज की स्मृति में निराला ने एक लंबी कविता लिखी, जो हिन्दी का अनन्य शोकगीत है। उक्त काव्य में करुणा भाव है, मार्मिकता है, राग–विराग, श्रृंगार, व्यंग्य, हास्य समेत कई रस है, जो काफी विशिष्ट है। **'सरोज स्मृति'** पुत्री सरोज की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन है। उक्त काव्य में एक भाग्यहीन पिता का जीवन संघर्ष, अभाव के कारण अपने लिए कुछ न कर पाने का असमर्थताबोध भी परिलक्षित हुआ है। निराला द्वारा भोगे गए दारूण यथार्थ को समझने के लिए यह कविता एक प्रमुख दस्तावेज है। उनके जीवन संघर्ष, त्रासदी और असमर्थता को सरोज स्मृति की निम्न पंक्तियों के द्वारा समझा जा सकता है–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागगोपाच
पर रहा सदा संकुचित–काथ
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ–सगर।

निराला की प्रमुख कविताओं में **'कुकुरमुत्ता'** का भी प्रमुख स्थान है। इस व्यंगप्रधान कविता में गुलाब पुष्प के बहाने पुंजीवाद पर कवि द्वारा करारा प्रहार किया गया है।

अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबू, रंग–ओ–आब,

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट !
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,

यूं तो महाप्राण निराला का जन्म 21 फरवरी को हुआ था, लेकिन हिन्दी पट्टी में उनका जन्मदिवस समारोह बसंत पंचमी को ही मनाया जाता है। इसके पीछे ऐसा माना जाता है कि उनके द्वारा वसंत ऋतु पर उत्कृष्ठ रचनाएं लिखी गई हैं। उनके द्वारा रचित सरस्वती वंदना गीत को हिन्दी में लिखी गई सबसे श्रेष्ठ सरस्वती वंदना माना जाता है। सरस्वती वंदना की पंक्तियों में श्रद्धा भाव के उच्चतम स्तर का अनुभव किया जा सकता है–

वर दे वीणावादिनी! वर दे।
प्रिय स्वतंत्र–रव अमृत–मंत्र नव,
भारत में भर दे।
काट अंध–उर के बंधन–स्तर,
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुव–भेद–तम हर, प्रकाष्ठा भर,
जगमग जग कर दे।

जीवन के अंतिम समय में निराला काफी बीमार रहे। इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के दारागंज मोहल्ले में एक छोटे से कमरे में अपना अंतिम समय बिताया और इसी कमरे में 15 अक्टूबर 1961 को इस दुनिया को अलविदा कहा।

कहना न होगा कि कवि निराला का जीवन अभाव व संघर्ष में गुजरा है। अभाव और विपदाओं ने निराला को तोड़ा नहीं बल्कि परिमार्जित किया है। उनके लेखन कौशल में निखार लाया है। अंतहीन पीड़ा और त्रासदी के बावजूद उन्होंने लिखना नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने स्वभाव को नहीं भुलाया। यह भी सच है कि साहित्य जगत के एक वर्ग द्वारा वे उपेक्षा के शिकार रहे। अपनी रचनाओं के बदले थोड़ा सा पारिश्रमिक उन्हें मिलता रहा, जिसके कारण उनका जीवन अर्थाभाव में ही बीता। उन्होंने हिन्दी कविता में छंदमुक्त शैली को अपनाया और आगे बढ़ाया। प्रारंभ में उनकी रचनाएं संपादकों द्वारा लौटा दी जाती थी। इसके बावजूद उन्होंने अपनी शैली को नहीं छोड़ा। यह भी गौरतलब है कि निराला ने ताउम्र आर्थिक संकट झेला, लेकिन लोगों की मदद करने की अपनी आदत को नहीं छोड़ा। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य की दुनिया उन्हें महाप्राण उपनाम से आज भी याद करती है।

मुकेश कुमार
सहायक

राजभाषा पखवाड़ा -प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध

वैश्विक स्तर पर भाषा के रूप में हिंदी के बढ़ते कदम

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौर–ए–जहां हमारा"

नब्बे के दशक में जब भारत में उदारीकरण की नीति अपनाई गई तो प्रबुद्धजनों को लगा कि उदारीकरण–भूमंडलीकरण की आंधी में हिन्दी खतरे में पड़ जाएगी, क्योंकि वैश्वीकरण की भाषा अंग्रेजी है जो कि काफी विश्वव्यापी और प्रभावी है। आज लगभग तीन दशक बाद हिन्दी के प्रति प्रबुद्धजनों की आशंका के मद्‌नजर हम मूल्यांकन करते हैं, तो पाते हैं कि तमाम अवरोधों के उपरांत भी हिन्दी भाषा ने अपनी प्रासंगिकता एवं प्रभाव को बढ़ाया है।

भूमंडलीकरण के इस युग में हिन्दी की सामर्थ्य, सीमा और प्रभाव दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। हिन्दी भाषा भारत के मुकुटमणि के रूप में स्थापित हो चुकी है। इसने देश को अभिव्यक्ति एवं सभ्यता व संस्कृति के वाहक के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

राष्ट्रभाषा किसी भी देश की अस्मिता से जुड़ी होती है। इस परिप्रेक्ष्य मैं देखें तो हिन्दी ने भारत की वैश्विक अभिलाषा का सम्मान बढ़ाया है।

वैश्विक भाषा के रूप में हिन्दी

जैसा विदित है कि वर्तमान युग भूमंडलीकरण का है। पूरा विश्व एक ग्राम के रूप में परिणत हो चुका है। स्पष्ट है कि बदलते परिवेश में वही भाषा जीवित रह सकेगी जो संपर्क संवाद की भाषा के रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखेगी। इस संदर्भ में देखें तो हिन्दी सारी कसौटियों पर खरी उतरती है। यह भाषा सरल व सहज है, जिसे अंगीकार करना सुविधाजनक है, जिसके कारण पूरे विश्व में हिन्दी भाषा का दिनोंदिन प्रसार होता जा रहा है। यह भाषा विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जानी वाली भाषा है। जंयती प्रसाद नौटियाल जैसे विशेषज्ञ ने तो यह साबित करने की कोशिश की है, कि हिन्दी विश्व की सबसे ज्यादा बोली जानी वाली भाषा है।

आज जिस तरह पूरे विश्व में भारतीय प्रवासी नागरिकों का प्रसार बढ़ा है हिन्दी ने उतनी ही तेजी से अपना पैर फैलाया है। आज विश्व के 137 देशों में लगभग दो करोड़ भारतीय प्रवास करते हैं, जो हिन्दी को अपनी भाषा के रूप मे प्रयोग करते हैं। हिन्दी अब रहन–सहन सभ्यता–संस्कृति के रूप में प्रयुक्त होती है।

मध्यकाल में तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' कृति ने हिन्दी का वैश्विक भाषा के रूप में मान बढ़ाया है। पूरे विश्व में रामचारित मानस के लगभग दो सौ ट्रस्ट है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज भारत पूरे विश्व में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा है। हिन्दी भाषा ने भारत के वैश्विक अभिलाषा के ध्वज को ऊंचा किया है। भारत सरकार हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा के रुप में स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र में 193 देशों में से लगभग 129 देशों का समर्थन चाहिए। हालांकि यह काफी चुनौती पूर्ण है तथापि इस दिशा में कुछ सफलता प्राप्त हुई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिन्दी को सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अपनाया है। ट्विटर, फेसबुक एवं इन्स्टाग्राम पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा हिन्दी में संदेश जारी किया जा रहा है। स्वयं संयुक्त राष्ट्र संघ की वेबसाइट हिन्दी में भी उपलब्ध है। यह हिन्दी के बढ़ते वैश्विक प्रयोग का ही परिणाम है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की एक संस्था यूनेस्को की नौ आधिकारिक भाषा में हिन्दी भी सम्मिलित है।

हिन्दी भाषा आज दुनिया के लगभग 150 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। हाल के दशक में जापान, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों में हिन्दी शिक्षण का दायरा काफी बढ़ा है। हिन्दी भाषा सीखने वालों की संख्या भी काफी बढ़ी है।

आज नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, श्रीलंका, बांगलादेश आदि पड़ोसी राष्ट्रों में हिंदी बोलने वालों की काफी आबादी है। इसी प्रकार यह भाषा थाइलैंड, जावा, सुमात्रा, इंग्लैंड, अमेरिका, फीजी, गुयाना, यूरीनाम् त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका आदि सुदूर राष्ट्रों में काफी लोकप्रिय होती जा रही है। हिन्द महासागर में ''छोटा भारत'' उपनाम से प्रसिद्ध मौरीसस में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए काफी प्रयास हुआ है। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भी यहीं हुआ था। 'बसंत' एवं 'रिमझिम' नामक हिन्दी पत्र का यहां नियमित प्रकाशन हो रहा है। इस राष्ट्र द्वारा हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में प्रयोग के कारण हिन्दी का प्रसार बढ़ा है।

हिन्दी सिनेमा का भी हिन्दी के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी सिनेमा भारतीय उपमहाद्वीप के साथ–साथ सुदूर अफ्रीका व अमेरिका जैसे महाद्वीपों में काफी लोकप्रिय है जिसके कारण हिन्दी भाषा का प्रसार काफी बढ़ा है।

किसी भी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित होने के लिए उसके साहित्य का भी संपन्न होना अपरिहार्य है। हिन्दी में साहित्य रचना की एक प्राचीन परम्परा रही है। हाल के दिनों में हिन्दी भाषा में विविधतापूर्ण लेखन हुआ है। हिन्दी में रचित 'रेत की समाधि' उपन्यास को बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ है, जो हिन्दी भाषा साहित्य के वैश्विक प्रभाव का परिणाम है।

किसी भी भाषा के शब्द को अंगीकार करना हिन्दी की अनूठी विशेषता है। प्रेमचंद ने भी कभी हिन्दी में दूसरी भाषाओं के शब्दों को अंगीकार करने की वकालत की थी। आज हिन्दी में दुनिया के कई भाषाओं के शब्द पूरी तरह मिल गये है। दूसरी भाषाओं के शब्दों को अंगीकार करने की विशेषता के कारण हिन्दी को स्वीकार करना सहज बनाया है।

हिन्दी भाषा की चुनौतियां

हिन्दी के वैश्विक भाषा बनने की राह में कई बाधाएं हैं। सबसे पहले आजादी के लगभग सात दशक बाद भी यह भाषा रोजगार की भाषा नही बन पाई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सामने विज्ञापन की भाषा के रुप में हिन्दी के सामने अंग्रेजी भाषा बाधा है।

इसी प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी अभी देश के न्यायलयों की भाषा नहीं बन पाई है। कार्यालयी कामकाज की एक मात्र भाषा के रूप में हिन्दी के सामने अंग्रेजी भाषा बाधा है। कमोवेश यही हाल हिन्दी प्रशिक्षण व पठन–पाठन का है मानकीकरण भी हिन्दी भाषा की प्रमुख समस्या है।

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा काफी पिछड़ी है। हालांकि हाल के दिनों में अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ने हिन्दी में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया है। मध्य प्रदेश समेत कई प्रदेशों में चिकित्सा पाठ्यक्रम से संबंधित किताबें हिन्दीं में उपलब्ध है। हालांकि इस दिशा में अभी भी गंभीर प्रयास की आवश्यकता है।

उपसंहार

विश्व भाषा बनने की राह में खड़ी हुई समस्याओं के उपरांत भी आज इस भाषा का भविष्य उज्जवल है। पूरे विश्व में दिनोंदिन हिन्दी का प्रसार प्रमुखता से बढ़ता जा रहा है। हिन्दी ने सूचना व प्रौधोगिती के क्षेत्र में लम्बी छलांग लगाई है। इंटरनेट पर हिन्दी में करोड़ो पृष्ठों में सामग्री उपलब्ध है। कहना न होगा कि आज बदलते परिवेश में हिन्दी ने हर चुनौती का कुशलतापूर्वक सामना किया है तथा स्वयं को प्रासंगिक बनाया है। किसी भी भाषा का भविष्य प्रयोगकर्ता के आचरणों पर निर्भर करता है।

हिन्दी आम जन की भाषा है। यह संपर्क भाषा है। कहना न होगा कि हिन्दी की इसी विशेषता से ज्यादा आम लोगों के विश्वास ने इसे आगे बढ़ाया है।

मुकेश कुमार
सहायक

पंजाबी बनाम हिन्दी

हिंदी और पंजाबी भाषाएँ इंडो–यूरोपीय परिवार के एक ही उपसमूह यानी भाषाओं के इंडो–आर्यन परिवार से संबंधित हैं। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है और पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है। न केवल भाषाएँ ही एक स्रोत से आती हैं, बल्कि उनकी लिपियाँ भी एक ही स्रोत से आती हैं। भारत में हिन्दी को केंद्र सरकार द्वारा 'आधिकारिक भाषा' का दर्जा दिया गया है। पंजाबी पंजाब राज्य की आधिकारिक भाषा है और इसका प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। यह पाया गया है कि दोनों भाषाएँ एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। इन दोनों में बहुत सारी समानताएं भी पाई जाती है।

देवनागरी-गुरुमुखी व्यंजन समानताएं:

1. ਕ = क
2. ਚ = च
3. ਜ = ज
4. ਟ = ट
5. ਠ = ठ
6. ਢ = ढ
7. ਨ = न
8. ਬ = ब
9. ਲ = ल

गिनती में समानताएं:

हिन्दी गुरुमुखी

० = ੦   १ = ੧   २ = ੨   ३ = ੩

४ = ੪   ५ = ੫   ६ = ੬   ७ = ੭

८ = ੮   ७ = ੯

हिन्दी- पंजाबी में कुछेक शाब्दिक समानताएं:

आग (àg) - ਅੱਗ (aga) - fire

पानी (pàni) - ਪਾਣੀ (pâni) - water

काम (kaam) - ਕੰਮ (kamm) - work

रात (ràt) - ਰਾਤ (ràt) - night

मछली (machli) - ਮੱਛੀ (macchi) - fish

फूल (phùl) - ਫੁੱਲ (phula) - flower

कुत्ता (kuttà) - ਕੁੱਤਾ (kuttà) - dog

नदी (nadi) - ਨਦੀ (nadi) - river

शांति (shaanti) - ਸ਼ਾਂਤੀ (shaanti) - peace

आजादी (àzàdi) - ਅਜ਼ਾਦੀ (azàdi) - freedom

भाषा (bhàsà) - ਭਾਸ਼ਾ (bhàsà) - language

चांद (chand) - ਚੰਦ (chand) - moon

बिल्ली (billi) - ਬਿੱਲੀ (billi) - cat

प्यार (pyàr) - ਪਿਆਰ (piàra) - love

जीवन (jivan) - ਜੀਵਨ (jivan) - life

दोस्त (dost) - ਦੋਸਤ (dosat) - friend

दिन (din)	ਦਿਨ (dinn)	day
भोजन (bhojan)	ਭੋਜਨ (bhojan)	food
पिता (pità)	ਪਿਤਾ (pità)	father
अध्यापक (adhiàpak)	ਅਧਿਆਪਕ (adhiapàk)	teacher
समुद्र (samudra)	ਸਮੁੰਦਰ (samundar)	sea
शहर (śahar)	ਸ਼ਹਿਰ (śehar)	city
कानून (qànùn)	ਕਾਨੂੰਨ (kanùn)	law
कागज (kàgàz)	ਕਾਗਜ਼ (kàgàz)	paper
खुश (khush)	ਖੁਸ਼ (khuś)	happy

उपरोक्त के अतिरिक्त भी पंजाबी और हिन्दी में बहुत सारी समानताएं है। इस प्रकार हिन्दी भाषा–भाषियों के लिए पंजाबी तथा पंजाबी भाषा जानने वालों के लिए हिंदी पढ़ना, लिखना और बोलना आसान है।

सतीश कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

कहानी

आपदा में अवसर

मोहन, श्याम और संजय बचपन से अनाथ थे। उन्हें अपने मां–बाप का चेहरा तक याद नहीं था। मोहन उन सब में सबसे बड़ा भाई था। उम्र में उन दोनों भाईयों से लगभग पांच साल बड़ा था। दोनों छोटे भाइयों के होश सभालने से पहले ही मोहन ने उनकी जिम्मेवारी उठाना सीख लिया था।

सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था, लेकिन एक दिन उन्हें नियति के निर्णय का सामना करना पड़ा। दरअसल मोहन हाइवे किनारे एक ढाबे में नौकर था। लगता है नियति को उनकी यह छोटी भी खुशी मंजूर नहीं थी। हुआ यूं कि रात को काम से लौटने के दौरान हाइवे पर मोहन को किसी गाड़ी ने टक्कर मार दी। मोहन बेसुध सड़क पर गिर गया। वह चेतनाशून्य, घंटों पड़ा रहा। तभी किसी राहगीर की उस पर नज़र पड़ी। उसे अस्पताल ले जाया गया। डाक्टर ने बताया कि उसे लाने में काफी देर हो गयी है। शरीर से काफी खून बह चुका है।

उसके दोनों छोटे भाईयो को जब इस दुर्घटना की खबर मिली तो मानों उन पर पहाड़ टूट पड़ा। अस्पताल में मोहन का इलाज चल रहा था और दोनों भाई चुपचाप वार्ड के बाहर घटों पड़े रहते। हर आने–जाने वाले की ओर एक उम्मीद और हसरत से देखते। नियति बेशक निर्मम हो, लेकिन जीवन में कुछ ईश्वर प्रदत्त ऐसा प्रारब्ध होता है जो हमें जीने का संबल देता है। लाख विपदाओं के बावजूद मोहन को डाक्टर ने बचा लिया, लेकिन उसे लकवाग्रस्त होने से बचा नहीं सके। मोहन की कमर के नीचे की नसें सुन पड़ गई थी। अस्पताल में किसी एनजीओ की ओर से उसे व्हीलचेयर मिल गई थी, जिसके सहारे वह चलने–फिरने लगा था।

विकलांग हो जाने से मालिक ने उससे मुंह मोड़ लिया। उन्हें खाने के लाले पड़ गए। जीवन में तमाम दुखों के बावजूद तीनों भाईयों ने जीवन से हारना नहीं बल्कि लड़ना सीखा था। मोहन बहुत अच्छी पेटिंग बनाता था और उसने अपनी इस कला को अपनी बदहाली के खिलाफ हथियार बना लिया। मोहन रोज गत्ते पर नये–नये चित्र बनाता और उसे फ्रेम की शक्ल में बाजार में जाकर बेचना शुरू कर दिया। मोहन की पेंटिंग पर लोगों की अच्छी प्रतिक्रिया मिली। उनकी पेंटिंग धड़ल्ले से बिकने लगी। जल्द ही मोहन ने शहर में एक स्टूडियो खोल दिया।

आज मोहन एक विख्यात पेंटर है, उसकी अच्छी खासी आमदनी है और वह दोनों भाईयों को यू.पी.एस.सी. की तैयारी करवा रहा है। सच में मोहन ने आपदा को एक अवसर में बदल लिया था।

मुकेश कुमार, सहायक
(क.रा.बी.निगम, लुधियाना)

हिन्दी के संख्यावाचक शब्द

1. **हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों की एकरूपता**

2. हिन्दी प्रदेशों में संख्यावाचक शब्दों के उच्चारण और लेखन में प्रायः एकरूपता का अभाव दिखाई देता है। इसीलिए एक से सौ तक सभी संख्यावाचक शब्दों पर विचार करने के बाद इनका जो मानक रूप स्वीकृत हुआ, वह इस प्रकार है–

3. **संख्यावाचक शब्द**

एक	सोलह	इकतीस	छियालीस	इकसठ	छिहत्तर	इक्यानवे
दो	सत्रह	बत्तीस	सैंतालीस	बासठ	सतहत्तर	बानवे
तीन	अठारह	तैंतीस	अड़तालीस	तिरसठ	अठहत्तर	तिरानवे
चार	उन्नीस	चौंतीस	उनचास	चौसठ	उनासी	चौरानवे
पाँच	बीस	पैंतीस	पचास	पैंसठ	अस्सी	पचानवे
छह	इक्कीस	छत्तीस	इक्यावन	छियासठ	इक्यासी	छियानवे
सात	बाईस	सैंतीस	बावन	सड़सठ	बयासी	सतानवे
आठ	तेईस	अड़तीस	तिरपन	अड़सठ	तिरासी	अठानवे
नौ	चौबीस	उनतालीस	चौवन	उनहत्तर	चौरासी	निन्यानवे
दस	पच्चीस	चालीस	पचपन	सत्तर	पचासी	सौ
ग्यारह	छब्बीस	इकतालीस	छप्पन	इकहत्तर	छियासी	हजार
बारह	सत्ताईस	बयालीस	सत्तावन	बहत्तर	सतासी	लाख
तेरह	अट्ठाईस	तैंतालीस	अट्ठावन	तिहत्तर	अठासी	करोड़
चौदह	उनतीस	चवालीस	उनसठ	चौहत्तर	नवासी	अरब
पंद्रह	तीस	पैंतालीस	साठ	पचहत्तर	नब्बे	आदि–आदि।

4. **क्रमसूचक संख्याएँ (Ordinal Numbers)**

पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाँचवाँ
छठा	सातवाँ	आठवाँ	नवाँ	दसवाँ

5. **भिन्नसूचक संख्याएँ (Fractional Numbers)**

एक चौथाई	¼	सवा दो	2¼	आधा	½	ढाई	2½
पौन	¾	पौने तीन	2¾	सवा	1¼	सवा तीन	3¼
डेढ़	1½	साढ़े तीन	3½	पौने दो	1¾		

6. **समय के लिए**

पौन बजा है	अर्थात्	12.45	सवा बजा है	अर्थात्	01.15
डेढ़ बजा है	अर्थात्	01.30	पौने दो बजे हैं	अर्थात्	01.45
सवा दो बजे हैं	अर्थात्	02.15	ढाई बजे हैं	अर्थात्	02.30
पौने तीन बजे हैं	अर्थात्	02.45	साढ़े तीन बजे हैं	अर्थात्	03.30

राज भाषा शाखा

कार्यालय पुस्तकालय-एक नज़र में

यह ठीक ही कहा गया है कि एक अच्छी किताब सौ दोस्तों के बराबर होती है। हमारे जीवन में पुस्तकों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि वे हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सही रास्ते पर ले जाती हैं।

सही किताब ढूंढना भी आवश्यक चीजों में से एक है। ऐसी किताब चुनना जो आपकी पसंद या शैली की नहीं है, किसी भी व्यक्ति के लिए उबाऊ हो सकती है। स्थिति चाहे जो भी हो, पुस्तक का प्रभाव हमेशा ऊंचा रखा जा सकता है। किताबें पढ़ने से हमें नए शब्दों और विचारों के बारे में जानने को मिलता है। किताबें पढ़ने से हमारी स्मरण शक्ति बढ़ती है। किताबें पढ़कर हम अपने जीवन में जो बनना चाहते हैं वह बन सकते हैं। किताबें हमें अतीत और वर्तमान के बारे में जानने में मदद करती हैं और हमें अपना भविष्य बनाने में मदद करती हैं।

कार्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों पर लगभग 300 पुस्तकें हैं जिनमें से कुछेक का कार्मिकों की सुविधा के लिए यहाँ उल्लेख किया गया है।

1. गुरु गोविंद सिंह जी – जीवन एवं दर्शन
2. अंबेडकर चरित मानस
3. आंखो देखा पाकिस्तान (कमलेश्वर)
4. तमस (भीष्म साहनी)
5. 'Five Points Someone' (चेतन भगत हिन्दी–अनुवाद)
6. सामान्य विज्ञान– प्रतियोगिता दर्पण
7. ज्ञान योग–स्वामी विवेकानंद
8. MEN are from MARS; WOMEN are from VENUS (John Gray & हिन्दी अनुवाद)
9. Immortals of Meluha (अमिश – हिन्दी अनुवाद)
10. भारत– 2019 (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार)
11. Who Moved My Cheese (डॉ. स्पेंसर जॉनसन– हिन्दी अनुवाद)
12. इनर इंजीन्यरिंग (सदगुरु)
13. The Alchemist (पाओलो कोएलो– हिन्दी अनुवाद)
14. 30 Days Change Your Habbits (मार्क रेकलोड– हिन्दी अनुवाद)
15. A BRIEF HISTORY OF TIME (स्टीफेन हाकिंग– हिन्दी अनुवाद)

शमशेर सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना वर्ष 2023 के लिए कर्मचारियों की सूची

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम (श्री/श्रीमती/कु.) व पदनाम	तैनाती स्थान
1	प्रदीप सिंह, प्र.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
2	सुरेन्द्र कुमार पूनिया कार्यालय अधीक्षक	" "
3	अमनदीप कौर, प्र.श्रे.लि.	वित्त एवं लेखा/राजस्व–2
4	करमजीत कौर, प्र.श्रे.लि.	" "
5	शमशेर सिंह कार्यालय अधीक्षक	वित एवं लेखा
6	आशीष कुमार सिंह, अ.श्रे. लि.	शाखा कार्यालय, ग्यासपुरा
7	पप्पू कुमार अ.श्रे.लि.	" "
8	रजनीश कुमार, प्र.श्रे.लि.	" "
9	दीप सिंह, प्र.श्रे.लि.	" "
10	गणेश प्रसाद, प्र.श्रे.लि.	" "
11	कृष्णा कुमारी, शाखा प्रबंधक	" "
12	निखिल गर्ग, कार्यालय अधीक्षक	हितलाभ शाखा
13	प्रिंस कुमार, अ.श्रे.लि.	" "
14	रमनदीप सिंह, सहायक	" "
15	राम प्रवेश सहायक	" "
16	विकास खोखर, अ.श्रे.लि.	प्रेषण एवं प्राप्ति शाखा
17	आशीष सिंगल, प्र.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
18	नवजीत सिंह, सहायक	" "
19	बलविंदर सिंह, कार्यालय अधीक्षक	वसूली
20	अर्शदीप कुमार, प्र.श्रे.लि.	समन्वय
21	तरुण कुमार, प्र.श्रे.लि.	संगणक

22	अनिल कमार, सहायक	राजस्व –1
23	जसप्रीत सिंह सहायक	वसूली
24	रंजना गोस्वामी, प्रबंधक	शाखा कार्यालय, कोहाड़ा
25	सरोज कुमारी, कार्यालय अधीक्षक	प्रशासन
26	दीपक भाटिया, सहायक	" "
27	हरेराम कुमार, अ.श्रे.लि.	" "
28	राजेश कुमार, अ.श्रे.लि.	प्रेषण
29	मेघना ककारिया, उ.श्रे.लि.	शाखा कार्यालय, गिल रोड़
30	लवप्रीत सिंह, प्र.श्रे.लि.	" "
31	संतोश सिंह, प्र.श्रे.लि.	" "
32	अमनदीप सिंह, प्र.श्रे.लि.	" "
33	सुनील मोची, प्र.श्रे.लि	" "
34	मंजु शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	राजस्व–1
35	शिवा कुमार, प्र.श्रे.लि.	शाखा कार्यालय, राहों रोड़
36	सुखदीप सिंह प्र.श्रे.लि.	" "
37	विश्वास, प्र.श्रे.लि.	शाखा कार्यालय, ग्यासपुरा
38	श्याम लाल, सहायक	" "
39	अनिल कुमार कथूरिया, कार्यालय अधीक्षक	वित्त एवं लेखा
40	सपना रानी, प्र.श्रे. लि.	" "
41	मोहित कुमार, प्र.श्रे.लि.	" "
42	नीरज कुमार सहायक	सामान्य
43	सुजीत कुमार, सहायक	राजस्व–2
44	मनीष कुमार, प्र.श्रे.लि.	राजस्व–1

45	मनीष शर्मा, प्र.श्रे.लि.	" "
46	शशि कुमार, प्र.श्रे.लि.	" "
47	मोहित कुमार धीमान, प्र.श्रे.लि.	वसूली
48	रजनीश, प्र.श्रे.लि.	" "
49	रंजीत सिंह, सहायक	राजस्व–2
50	सुखविंदर सिंह सहायक	कोहाड़ा
51	तरुण कुमार, प्र.श्रे.लि.	संगणक
52	कुलवीर माही, सहायक	वसूली
53	हरिन्दर सिंह, प्र.श्रे.लि.	बड़ा नियोजक कक्ष
54	अमित आनंद, अ.श्रे.लि.	रोकड़
55	जगरीत सिंह, प्र.श्रे.लि.	" "
56	मुकेश कुमार सहायक	प्रशासन
57	हरजोत सिंह, सहायक	राजस्व–1

राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिताओं के विजेतागण वर्ष -2023

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक: 18-09-2023)

क्रं. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/कु.	प्रतियोगिता में प्राप्त स्थान	प्राप्त नकद पुरस्कार राशि
1	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/-
2	अनिल कुमार, सहायक	द्वितीय	रुपये 1500/-
3	आशीष कुमार सिंह, अ.श्रे.लि.	तृतीय	रुपये 1200/-
4	राजेश कुमार, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-
5	सपना रानी, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-

हिन्दी टिप्पणी एवं आलेखन प्रतियोगिता (दिनांक: 20-09-2023)

1	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/-
2	राजेश कुमार, अ.श्रे.लि.	द्वितीय	रुपये 1500/-
3	अनिल कुमार, सहायक	तृतीय	रुपये 1200/-
4	विकास खोखर, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-
5	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-

राजभाषा ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता (दिनांक: 21-09-2023)

1	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/-
2	राजेश कुमार, अ.श्रे.लि.	द्वितीय	रुपये 1500/-
3	दीपक भाटिया, सहायक	तृतीय	रुपये 1200/-
4	विकास खोखर, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-
5	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-

हिन्दी वाक प्रतियोगिता (दिनांक: 25-09-2023)

1	मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/-
2	सपना रानी, प्र.श्रे.लि.	द्वितीय	रुपये 1500/-
3	विकास खोखर, अ.श्रे.लि.	तृतीय	रुपये 1200/-
4	सुनील कुमार मोची, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-
5	आरजू ग्रोवर, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/-

आरती ओम जय जगदीश हरे के रचियता: पंडित श्रृद्धाराम फुल्लौरी

हिन्दुस्तान अपनी आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक–संस्कृति के लिए विश्व–प्रसिद्ध है, और आध्यात्मिक गुरु माना जाता है। हमारी आध्यात्मिक संस्कृति से त्रिदेव यानि ब्रह्मा विष्णु और महेश का बहुत महत्व है। ब्रह्मा सृष्टि का निमार्ण करते हैं, विष्णु श्रृष्टि का पालन करते है और शिव श्रृष्टि का संहार करते हैं, श्रृष्टि का पालन करना वास्तव में महत्वपूर्ण कार्य है, रचनात्मकता, गति और गतिशीलता का प्रतीक है, यही कारण है कि उन्हें त्रिदेवों में प्रमुख माना जाता है, उन्हें हरि विष्णु, भगवान, जगदीश्वर और जगदीश माना जाता है। घर–घर पूजा के अनुष्ठान और पूजा के समापन पर गायी जाने वाली आरती 'ऊँ जय जगदीश हरे' आज करोड़ो लोगों को आनन्दित करती है और श्रृद्धा से सिर झुक जाता है।

यह बहुत कम लोग जानते है कि ऊँ जय..................जगदीश हरे की आरती आज से लगभग 154 वर्ष पहले सन् 1870 में आयी व इसके गायक व रचियता श्रृद्धाराम फुल्लोरी थे। श्री श्रृद्धाराम फुल्लोरी का जन्म 30 सित्मबर 1837 को पंजाब के लुधियाना के पास फुल्लारी गाँव में हुआ था, इसलिए इन्हे श्रृद्धाराम फुल्लौरी के नाम से जाना जाता है। पंडित श्रृद्धाराम को एक प्रसिद्ध साहित्यकार के साथ–साथ सनातन धर्म के प्रचारक, कथाकार और समाजसेवी के नाम से जाना जाता है। पंडित श्रृद्धाराम पंजाब के विभिन्न स्थानों पर जा जाकर लोगों को रामायण और महाभारत की कथा सुनाते रहे थे, इस तरह वे निजी जिन्दगी जीते थे, वे सत्यवान, दयावान थे, और दीन–दुनिया के प्रति सहानुभूति रखना उनके चरित्र की विशेषता थी, यही कारण था कि कथा में जो चढ़ावा आता था, उसे वे सब में बाँट देते थे। उनका कथा वाचन आकर्षण का केन्द्र होता था। प्रवचन से पूर्ण गायी

जाने वाली आरती ''ऊँ जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट दूर करें,'' भक्त जनों को आनन्दित करती थी। उन्होने अनेक धर्मसभाओं की स्थापना की। इस आरती की रचना के पीछे एक रोचक कारण बताया जाता है। वास्तव में पंडित जी सनातन् धर्म के अनन्य भक्त थे, उनके कथा वाचन और व्याख्याओं में जादुई प्रभाव था। कथा वाचन के इस सफर में पंडित श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने यह अनुभव किया कि भागवत कथा आदि में लोग समय पर नहीं पंहुचते है। अतः कथा प्रवचनों के प्रति रुचि पैदा करने के लिए कोई अच्छी प्रार्थना या आरती होनी चाहिए। कथाओं में लोग स्वतः पहुँचने लग जाएगें। ऐसा माना जाता है कि जिस अभाव की पूर्ति के लिए प. श्रृद्धाराम ने इस आरती की रचना की, इस आरती से उनकी मनोकामना पूर्ण हुई और आरती घर–घर में लोक प्रिय हुई। इस आरती की रचना करने के पीछे पंडित जी की कोई स्वमहत्त्व की कामना नहीं थी। सामान्यतः जब कोई कवि और रचनाकार अपनी रचना प्रस्तुत करता है तो प्रायः ही काव्य कविता के अन्त में अपना नाम या उपनाम देकर अपनी यह चाव कराता है। लेकिन पंड़ित जी द्धारा रचित आरती में पूरा नाम तो नहीं मिलता लेकिन आरती की अन्तिम अद्धोली में एक शब्द मिलता है, जहाँ वे कहते हैं, श्रृद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा । आज उनकी इस रचना के इतने वर्षों बाद भी ऊँ जय जगदीश हरे की लोकप्रियता इतनी है कि किसी–पूजा अनुष्ठान के अन्त में इसे गाकर समापन होता है। लेखक पंडित श्रद्वाराम फुल्लौरी द्वारा रचित यह आरती आज करोड़ों लोगों की भक्ति के प्रति भावना को साकार कर रही है। इसका हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में गाये जाने वाले भजन, कीर्तन और आरतियों मे अनुपम और अद्वितीय स्थान है।

स. गुप्ता (सुभाष चन्द्र गुप्ता)
उपनिदेशक (सेवा निवृत्त) ऐसिक

रचना

आरती: ऊँ जय जगदीश हरे

आरती में आर्त भावना होती है, आरती में अपने मूल रुप में देवी—देवताओं के चरित्र, गुणगान आदि का वर्णन होता है, एक अनुनय, विनय, अर्पण और समर्पण होता है। इसी आरती का ज्येष्ठ और श्रेष्ठ रुप है हरि विष्णु, जगदीश्वर और जगदीश की आरती ऊँ जय जगदीश हरे।

ऊँ जय जगदीश हरे।
ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण मे दूर करे ।। ऊँ जय............ ।।
ज्यो ध्यावे फल पावे, दुरवः विनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ऊँ जय........ ।।
मात—पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किस की।
तुम बिन और न दूजा आस करु जिस की।। ऊँ जय........ ।।
तुम पुरण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी ।
पार बह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ऊँ जय.............. ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं मूर्ख फल कामी, कृपा करो भर्त्ता।। ऊँ जय.................. ।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण—पति।
किस विधि मिलू दयामय, तुमको में कुमति।। ऊँ जय....... ।।
दीन—बन्धु दुखः हर्त्ता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ऊँ जय................. ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रृद्धा भक्ति बढाओ, सन्तन की सेवा।। ऊँ जय................. ।।
श्री जगदीश जी की आरती जो कोई जन गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।। ऊँ जय....... ।।

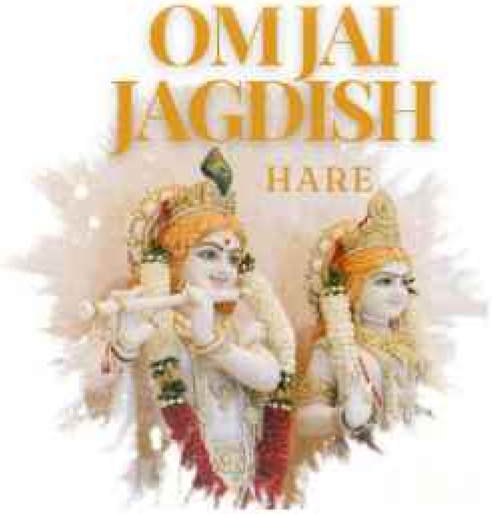

प्रस्तुतकर्ताः
(सुभाष चन्द्र गुप्ता)
उपनिदेशक (रिटार्यड)

दैनिक जागरण

कर्मचारी राज्य बीमा निगम लुधियाना के कर्मी पुरस्कार प्राप्त करते हुए • सौ. स्वयं

श्रेष्ठ कार्य निष्पादन को लेकर पाया पुरस्कार

जासं, लुधियाना : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लुधियाना की ओर से बड़े केंद्रीय कार्यालय की श्रेणी में उप क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम लुधियाना को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु वर्ष 2022 - 23 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके साथ - साथ कार्यालय की विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका "पंजज्योति" को भी वर्ष 2022-23 के लिए पुरस्कृत किया गया है। कार्यालय के उप निदेशक (प्रभारी) प्राणेश कुमार सिन्हा और सहायक निदेशक (राजभाषा) सतीश कुमार ने शील्ड एवं प्रमाणपत्र कार्यालय की ओर से ग्रहण किए गए। यह पुरस्कार दिनांक 25 अगस्त 2023 को लुधियाना में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 84 वीं बैठक में विक्रम गौड़ मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लुधियाना द्वारा प्रदान किया गया। सभी कार्मिकों ने कार्यालय के प्रथम आने पर बधाई दी।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया

कर्मचारियों को संबोधित करते निगम के अधिकारी।

सवेरा न्यूज/नीरज

[illegible]

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੇ ਸਵੱਛਤਾ ਹੀ ਸੇਵਾ ਸਫ਼ਾਈ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ

ਲੁਧਿਆਣਾ, 2 ਅਕਤੂਬਰ [illegible] 10ਵੀਂ ਵਰ੍ਹੇਗੰਢ ਮਨਾਉਂਦੇ ਹੋਏ, ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ, ਲੁਧਿਆਣਾ ਵੱਲੋਂ ਸਵੱਛਤਾ ਹੀ ਸੇਵਾ ਅਭਿਆਨ 2024 ਤਹਿਤ 17.09.2024 ਤੋਂ 02.10.2024 ਤੱਕ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। [illegible]

पंजाब केसरी

FRI,04 OCTOBER 2024
EDITION: LUDHIANA KESARI, PAGE NO. 4

'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024' पखवाड़ा सम्पन्न

■ कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने फोकल प्वाइंट एरिया में किया श्रमदान

'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024' के अंतर्गत श्रमदान करते ई.एस.आई.सी. के अधिकारी व कर्मचारी। (राकेश)

लुधियाना, 3 अक्तूबर (चोपड़ा/ सिकंदर): स्वच्छ भारत मिशन की 10वीं वर्षगांठ मनाते हुए 'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024' के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम लुधियाना द्वारा 17 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

इस पखवाड़े के समापन के अवसर पर कर्मचारी राज्य बीमा निगम उपक्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी प्राणेश कुमार सिन्हा के नेतृत्व में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा फोकल प्वाइंट एरिया में श्रमदान करते हुए जन सामान्य को स्वच्छता हेतु प्रेरित किया गया।

उल्लेखनीय है कि श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अधीन कर्मचारी राज्य बीमा निगम दुनिया के सबसे बड़े बहु-आयामी सामाजिक सुरक्षा सेवा प्रदाता संगठनों में से एक है। जो देश के कामगारों को बीमारी, प्रसव, निःशक्तता तथा रोजगार चोट से मृत्यु जैसी आकस्मिकताओं से बचाव के इलाजा बीमाकृत व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों को चिकित्सा सुविधा भी प्रदान करता है।

ਫ਼ੈਕਟਰੀ ਕਾਮਿਆਂ ਲਈ ਈ. ਐੱਸ. ਆਈ. ਸੀ. ਵਲੋਂ ਲਗਾਇਆ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਕੈਂਪ

[illegible]

ई.एस.आई.सी. के AAA+ एप्प से ऑनलाइन डॉक्टर अप्वाइंटमैंट बुकिंग सुविधा मिलेगी घर पर

विभाग ने विशेष सेवा पखवाड़े के दौरान जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

कैंप के दौरान जांच करवाते मुलाजिम।

सवेरा न्यूज/प्रतीक

लुधियाना, 10 फरवरी: कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.सी.) की 73वीं स्थापना वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 19 फरवरी तक चल रहे विशेष सेवा पखवाड़े के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय के वर्धमान स्पिनिंग मिल्स में जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ई.एस.आई.सी. की अवांछा खेड़ा द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न के विभिन्न हितलाभों के बारे में अवगत करवाया गया।

बीमित व्यक्तियों को राशि नकद हितलाभ को आईपी पोर्टल द्वारा ऑनलाइन आवेदन करने के बारे में भी बताया गया, जिसके द्वारा बीमित व्यक्ति स्वयं बीमारी हितलाभ क्लेम, नियोजन के दौरान चोट लगने पर अस्थायी अपंगता हितलाभ तथा मातृत्व हितलाभ संबंधी आवेदन ऑनलाइन फाइल कर सकता है। इसके अतिरिक्त बीमित व्यक्तियों को आधार लिंक करवाने की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया गया की कैसे बीमित व्यक्ति अपना व अपने परिवार का आधार लिंक करवा कर सुगमता से ईएसआईसी योजनाओं का लाभ पा सकता है। प्रतिभागियों को ईएसआईसी की मोबाइल एप AAA+ (Ask An Appointment) के बारे में जानकारी देते हुए बताया की अब बीमित व्यक्ति अपने व परिजनों का आधार नंबर मोबाइल एप के जरिये आई.एस.ए.सी. के साथ लिंक कर सकता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन डॉक्टर अप्वाइंटमैंट बुकिंग सुविधा भी घर बैठे ली जा सकती है, जिससे बीमित व्यक्ति के महत्वपूर्ण समय की बचत होगी। इस जांच शिविर में ई.एस.आई. आदर्श अस्पताल से डॉ. रश्मि जैन, ई.एस.आई. डिस्पैंसरी से डॉ. चन्द्र प्रकाश व उनकी टीम ने वर्धमान स्पिनिंग एंड जनरल मिल्स, लुधियाना के लगभग 369 कर्मचारियों के स्वास्थ्य की जांच की।

कर्मचारियों की जांच के आधार पर जरूरी दवाइयां भी वितरित की गईं। इस मौके उप क्षेत्रीय कार्यालय से अनिल कुमार कथूरिया, शाखा प्रबंधक नरिंदर कुमार, विकास मित्तल, दीपिका सुखीजा (मैनेजर), डॉ. परमिंदर सिंह (चिकित्सा अधिकारी) भी मौजूद रहे।

ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੇ ਸਵੱਛਤਾ ਹੀ ਸੇਵਾ ਸਫ਼ਾਈ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ

ਲੁਧਿਆਣਾ, 2 ਅਕਤੂਬਰ (ਵਿਸ਼ਾਲ ਸਤਮਾ) ਸਵੱਛ ਭਾਰਤ ਮਿਸ਼ਨ ਦੀ 10ਵੀਂ ਵਰ੍ਹੇਗੰਢ ਮਨਾਉਂਦੇ ਹੋਏ, ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ, ਲੁਧਿਆਣਾ ਵੱਲੋਂ ਸਵੱਛਤਾ ਹੀ ਸੇਵਾ ਅਭਿਆਨ 2024 ਤਹਿਤ 17.09.2024 ਤੋਂ 02.10.2024 ਤੱਕ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਮੌਕੇ ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਉਪ ਖੇਤਰੀ ਦਫ਼ਤਰ ਲੁਧਿਆਣਾ ਦੇ ਇੰਚਾਰਜ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰਨੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਸਿਨਹਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਹੇਠ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਤੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੇ ਫੋਕਲ ਵਿਖੇ ਕਿਰਤ ਦਾਨ ਕਰਕੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਵੱਛਤਾ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ ਬਿੰਦੂ ਖੇਤਰ ਇਸ ਮੁਹਿੰਮ ਦਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ, ਬੀਮਾਯੁਕਤ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਅਤੇ ਆਮ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ ਸਫ਼ਾਈ ਪ੍ਰਤੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਵਿੱਚ ਫ਼ਰਜ਼ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸਫ਼ਾਈ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰਕੇ ਹੋਰ ਮਹੱਤਵ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਸਕੇ। ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ, ਕਿਰਤ ਅਤੇ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਮੰਤਰਾਲੇ ਦੇ ਅਧੀਨ, ਵਿਸ਼ਵ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਬਹੁ-ਆਯਾਮੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਰੱਖਿਆ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਦਾਤਾ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ ਜੋ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਨੂੰ ਬਿਮਾਰੀ, ਜਣੇਪੇ, ਅਪੰਗਤਾ ਅਤੇ ਮੌਤ ਵਰਗੀਆਂ ਸੰਕਟਮਈ ਸਥਿਤੀਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਦੀ ਸੱਟ ਲਈ ਅਤੇ ਬੀਮਾਯੁਕਤ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਨੂੰ ਵਿੱਤੀ ਸਹਾਇਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਡਾਕਟਰੀ ਸਹੂਲਤਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਲੁਧਿਆਣਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਕਰਮਚਾਰੀ ਰਾਜ ਬੀਮਾ ਨਿਗਮ ਆਪਣੇ 01 ਉਪ-ਖੇਤਰੀ ਦਫ਼ਤਰ, 05 ਸ਼ਾਖਾ ਦਫ਼ਤਰਾਂ, 01 ਮਾਡਲ ਹਸਪਤਾਲ ਅਤੇ 13 ਈ.ਐਸ. ਆਈ ਡਿਸਪੈਂਸਰੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਲਗਭਗ 20514 ਫੈਕਟਰੀਆਂ, ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਲਗਭਗ 5 ਲੱਖ ਵਰਕਰਾਂ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

दैनिक जागरण

'स्वच्छता ही सेवा अभियान' का महत्व बताया

जागरण संवाददाता, लुधियाना : कर्मचारी राज्य बीमा निगम लुधियाना द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना एवं सभी अधीनस्थ शाखा कार्यालयों में स्वच्छता ही सेवा अभियान-2023 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उप क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना एवं सभी शाखा कार्यालयों में मौजूद वाटर टैंक, वाटर फिल्टर की सफाई की गई। उपयुक्त स्थल पर वृक्षारोपण की व्यवस्था की गई। शाखा कार्यालय फोकल प्वाइंट में बगीचे की सफाई भी की गई।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक सामान के रखरखाव पर भी ध्यान दिया गया। इसके अतिरिक्त लुधियाना के शाखा कार्यालयों एवं कारखाने वाले एरिया में सेमिनार एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस सेमिनार एवं कार्यशाला में मौजूद कामगारों को स्वच्छता को अपने जीवन में अपनाने के महत्व के बारे में बताया गया। शाखा कार्यालय [illegible] में आस-पास के आवासीय क्षेत्र में सफाई का कार्य किया गया। रविवार को शाखा कार्यालय, फोकल पॉइंट में राकेश कुमार, शाखा प्रबंधक के नेतृत्व में विशेष स्वच्छ सफाई अभियान चलाया जिसमें सुरेन्द्र पूनिया, शाखा अधीक्षक, संदीप [illegible], सामाजिक सुरक्षा अधिकारी और सुनील [illegible] की बड़ी भूमिका रही। कार्यक्रम में बहुत सारे बीमाकृत व्यक्तियों, नियोजकों, निगम के कर्मचारियों और स्थानीय व्यक्तियों ने भाग लिया और कार्यालय परिसर और आस पास के क्षेत्र की सफाई की। तत्पश्चात कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने जीवन नगर लुधियाना में स्थानीय लोगों की मदद से सफाई अभियान चलाया। इसके पश्चात उप क्षेत्रीय लुधियाना में सफाई अभियान चलाया गया। इसमें निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बीमाकृत व्यक्तियों और स्थानीय लोगों के साथ मिलकर आसपास के इलाके में सफाई की।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के कर्मी सफाई करते हुए • सौ. विभाग

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment, Government of India

ईएसआईसी दवारा आयोजित 'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024' के तहत क्षेत्रीय कायलिय, चंडीगढ़ एवं उप क्षेत्रीय कायलिय, लुधियाना में 'स्वच्छता दौड़/मैराथन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

चंडीगढ़

लुधियाना

दैनिक सवेरा टाइम्स

ई.एस.आई.सी. ने 'स्वच्छता ही सेवा 2024 पखवाड़े' के समापन पर फोकल प्वाइंट में सफाई अभियान चलाया

फोकल प्वाइंट में सफाई करते ई.एस.आई.सी. के मुलाजिम।

सवेरा न्यूज/प्रतीक, लुधियाना: कर्मचारी राज्य बीमा निगम(ई.एस.आई.सी.) के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने स्वच्छ भारत मिशन की 10वीं वर्षगांठ मनाते हुए, 'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024' के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्तूबर तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े के समापन के अवसर पर ई.एस.आई.सी. के उप क्षेत्रीय कार्यालयके प्रभारी प्राणेश कुमार सिन्हा के नेतृत्व में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा फोकल प्वाइंट एरिया में सफाई अभियान चलाया गया।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों, बीमित व्यक्तियों और आम नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना था। प्राणेश सिन्हा ने कहा कि दैनिक जीवन में स्वच्छता का विशेष महत्व है। बीमारियों से बचे रहने के लिए हर व्यक्ति को अपने आस-पास का क्षेत्र साफ सुथरा रखना जरूरी है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना

सत्यमेव जयते

यह प्रशस्ति पत्र श्री / श्रीमती / सुश्री सतीश कुमार, सहायक निदेशक (रा.भा.), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना को वर्ष २०२२-२३ के दौरान राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ निष्पादन हेतु उनके संस्थान को प्रदत्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने में विशेष योगदान देने के लिए प्रदान किया गया है ।

सदस्य सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
लुधियाना

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
एवं मुख्य आयकर आयुक्त
लुधियाना

आधार सीडिंग कैम्प का एक दृश्य

स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के दौरान शाखा कार्यालय, कोहाड़ा में बीमाकृत व्यक्तियों के साथ एक कार्यक्रम

पखवाड़े के दौरान विराकास की विशेष बैठक की एक झलक

हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं प्रमाणपत्र वितरण समारोह-2023 की एक झलक

गृहपत्रिका ''पंजज्योति अंक-6'' का विमोचन कार्यक्रम

राजभाषा चल शील्ड प्रतियोगिता वर्ष 2022-23 की विजेता शाखा (वित्त एवं लेखा शाखा) को शील्ड प्रदान करते हुए उप निदेशक (प्रभारी) श्री प्राणेश कुमार सिन्हा एवं अन्य अधिकारीगण।

शाखा कार्यालय कोहाड़ा में स्वच्छता पखवाड़े का एक दृश्य

क.रा.बी. योजना औषधालय फोकल पॉइंट में स्वच्छता पखवाड़ा-2023 का एक दृश्य

राजभाषा निरीक्षण के संबंध में कार्यालय के दौरे के समय श्री सूर्य प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) का स्वागत करते हुए कार्यालय प्रभारी श्री प्राणेश कुमार सिन्हा

15 अगस्त, 2023 को कार्यालय में ध्वजारोहण समारोह

नराकास, लुधियाना द्वारा कार्यालय की विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' को वर्ष 2022-23 के लिए पुरस्कृत किया गया।

बीमित व्यक्ति अपना और परिवार का आधार सिडिंग स्वयं करें

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

★ ★ ★ बीमित व्यक्ति कृपया ध्यान दें। ★ ★ ★

मैं स्वयं ओर अपने परिवार के लिए आधार को कैसे सीड कर सकता हूं

नियोक्ता के पास जाएं

ईएसआईसी शाखा कार्यालय जाएं

स्वयं द्वारा आधार सीडिंग

1. आईपी पोर्टल https://esic.gov.in पर लॉग इन करें
2. नियोक्ता को चुनें
3. आधार सीडिंग पर क्लिक करें
4. आधार सीड करने के लिए यहाँ क्लिक करें
5. नियम व शर्तों पर सहमति दें। आधार दर्ज करें
6. ओटीपी पुष्टि करें
7. यदि डाटा मेल खाता है तो आधार सीड हो जाएगा

ध्यान दें यदि मेल नहीं खाता है तो नियोक्ता से सत्यापन के लिए स्वत: रूप से एक अनुरोध सृजित होगा जो अनुमोदन के लिए शाखा कार्यालय भेजा जाएगा।
एक बार सत्यापित होने व अनमोदित हो जाने पर आधार सीड हो जायेगा और ABHA नंबर सृजित हो जायेगा

AAA+ मोबाइल ऐप से आधार सीडिंग

AAA+

1. Play store से AAA+App और Aadhar Face RD Download/Install करें
2. मोबाइल अपना नंबर दर्ज करें और GET OTP
3. OTP की पुष्टि करें
4. Left Mobile panel पर करें क्लिक
5. दर्शाए गए विकल्प में से Self/Family आधार सीडिंग चुनें
6. Seed Aadhaar पर क्लिक करें
7. GET OTP ... proceed ...
8. यदि डाटा मैच खाता है आधार सीड हो जाएगा

सभी बीमित व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे स्वयं एवं अपने परिवार के आश्रितजनों का आधार सीडिंग शीघ्र कराएं एवं विभिन्न सुविधाओं का लाभ उठायें।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय,
S.C.F. 22-23, फोकल प्वाईंट, अरबन एस्टेट, फेस – 2 लुधियाना – 141010